



भारतीय ज्ञान परंपरा में बुद्धि की अवधारणा: अर्थ, प्रकार, मापन-उपाय और जीवनोपयोगिता

डॉ. सुरेन्द्र पाल सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, डी.एस. कॉलेज, अलीगढ़

Email Id: drsps@dscaligarh.ac.in

Received: 10 October 2025 | Accepted: 21 October 2025 | Published: 30 October 2025

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में “बुद्धि” का अर्थ मात्र बौद्धिक क्षमता नहीं, बल्कि वह तत्त्व है जो विवेक, नीतिनिर्णय और आत्मानुभूति का आधार बनता है। वेदों, उपनिषदों, गीता, योगदर्शन तथा बौद्ध और वेदान्त परंपरा में बुद्धि को आत्मा के मार्गदर्शक सारथि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। कठोपनिषद् (1.3.3) में कहा गया— “आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥” अर्थात् बुद्धि वह सारथि है जो मन और इन्द्रियों को संयमित कर आत्मा को सत्यगति प्रदान करती है। भगवद्गीता में (18.30–32) सात्त्विक, राजस और तामस बुद्धि का विवेचन करते हुए श्रीकृष्ण ने धर्म-अधर्म के यथार्थ निर्णय को सात्त्विक बुद्धि का लक्षण बताया है। योगदर्शन में पतञ्जलि “विवेकख्याति” को मोक्ष का उपाय मानते हैं— “विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः ॥” (योगसूत्र, II.26) बौद्ध परंपरा में “प्रज्ञा” त्रिशिक्षा (शील, समाधि, प्रज्ञा) का तृतीय एवं श्रेष्ठ अंग मानी गई है, जो यथाभूत ज्ञान के द्वारा दुःखनिवारण का साधन बनती है।

यह लेख बुद्धि की परिभाषा, उसके प्रकार, भारतीय सन्दर्भ में मापन-उपाय तथा उसके व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उपयोग को विवेचित करता है। लेख का उद्देश्य यह दर्शाना है कि भारतीय दृष्टिकोण में बुद्धि केवल तार्किक नहीं, बल्कि नैतिक, करुणामूलक और आत्मबोधमुखी भी है।

मुख्य शब्द: बुद्धि, प्रज्ञा, विवेक, सात्त्विक बुद्धि, स्थिरप्रज्ञ, योगसूत्र, श्रुतमयी-चिन्तामयी-भावनामयी प्रज्ञा, वेदान्त, भारतीय ज्ञान परंपरा।

परिचय

भारतीय चिंतनधारा में “बुद्धि” मनुष्य की सर्वोच्च मानसिक शक्ति मानी गई है, जो न केवल निर्णय लेती है, बल्कि उसे धर्म-अधर्म के भेद की पहचान भी कराती है। बुद्धि शब्द संस्कृत धातु “बुध्” से बना है, जिसका अर्थ है — जानना, समझना या जागृत होना। अतः बुद्धि का अर्थ है जागृति या विवेकशील चेतना। वेदों में बुद्धि का स्वरूप दैवी तथा प्रेरक बताया गया है। ऋग्वेद में “मेधा” और “धिया” जैसे शब्दों द्वारा ज्ञान और प्रेरणा के लिए प्रार्थना की गई है —

“धियं नः धियवतां धियं धियो धियावतीम्।” (ऋग्वेद, 1.84.18) यहाँ “धिया” का तात्पर्य उस मानसिक शक्ति से है जो सत्य को ग्रहण करने की क्षमता प्रदान करती है। कठोपनिषद् में बुद्धि को जीवनरथ का सारथि कहा गया है। जब सारथि संयमी और विवेकी होता है, तब रथ (शरीर) सही दिशा में चलता है; अन्यथा वह भ्रमित होकर पतन की ओर जाता है। यह रूपक दर्शाता है कि मनुष्य-जीवन में बुद्धि का स्थान नियामक और पथप्रदर्शक है।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को संबोधित करते हुए कहा — “बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्॥” (गीता, 2.50) यहाँ “बुद्धियुक्त” व्यक्ति वह है जो कर्मों में समत्व और निष्कामभाव रखता है। गीता में बुद्धि को केवल ज्ञानात्मक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और आध्यात्मिक शक्ति माना गया है, जो जीवन के हर निर्णय को धर्मसम्मत बनाती है।

योगदर्शन में पतञ्जलि ने बुद्धि को “चित्त” का प्रमुख अंग बताया है। जब चित्त विक्षेपों से मुक्त होता है, तब बुद्धि का विवेक प्रकाशित होता है। यह विवेक ही प्रज्ञा की ओर ले जाता है। इसी प्रकार, बौद्ध दर्शन में “प्रज्ञा” का अर्थ है वह ज्ञान जो वस्तुओं को “यथाभूत” जानता है — न मोह से ढका हुआ, न आसक्ति से बँधा हुआ।

वेदान्त परंपरा में शंकराचार्य ने विवेकचूडामणि में कहा — “नित्यानित्य वस्तुविवेकः परमार्थदर्शनम्।” अर्थात् नित्य और अनित्य के बीच भेद कर सकने की शक्ति ही विवेक है, और यही सच्चे ज्ञान का प्रारम्भिक बिन्दु है। इस प्रकार, बुद्धि भारतीय मनोविज्ञान और दर्शन में मन-अहंकार-चित्त से भिन्न एक उच्चतर तत्त्व है, जो निर्णय और विवेक का संचालन करता है। आधुनिक मनोविज्ञान में जहाँ बुद्धि को केवल समस्या-समाधान या बौद्धिक प्रदर्शन से जोड़ा जाता है, वहीं भारतीय दृष्टि में यह आत्म-संयम, नैतिकता और करुणा से संयुक्त “जीवंत चेतना” है।

साहित्य समीक्षा एवं सैद्धान्तिक आधार:

1. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भारतीय दर्शन में बुद्धि की अवधारणा अत्यंत प्राचीन और व्यापक है। इसका उल्लेख वेदों से लेकर उपनिषदों, गीता, योगसूत्र, बौद्ध और वेदान्त साहित्य तक सतत रूप में मिलता है।

(क) वेद एवं उपनिषदों में बुद्धि-

ऋग्वेद में “धियः” और “मेधा” शब्दों के रूप में बुद्धि के दैवी स्वरूप की स्तुति की गई है। “धियं मे धारयेत् देवः।” (ऋग्वेद, 1.84.18) यहाँ ‘धिया’ का अर्थ वह शक्ति है जो सत्य को ग्रहण करने की क्षमता रखती है। यजुर्वेद में भी कहा गया है — “मेधा देवी जुषमाणा न आगा।” (यजुर्वेद, 32.15) अर्थात् ‘मेधा देवी’ अर्थात् बुद्धि-शक्ति कृपापूर्वक हमारे भीतर निवास करे। कठोपनिषद् में बुद्धि को जीवन-रथ का सारथि कहा गया है — “आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥” (कठोपनिषद्, 1.3.3) यहाँ आत्मा स्वामी है, बुद्धि सारथि है, मन लगाम है और इन्द्रियाँ घोड़े हैं। यदि सारथि विवेकी है तो आत्मा का रथ सही मार्ग पर चलता है।

(ख) भगवद्गीता में बुद्धि का विवेचन-

गीता में “बुद्धि” को कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति के माध्यम से संयमित जीवन का केन्द्र बताया गया है। “बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।” (गीता, 2.50) बुद्धियुक्त व्यक्ति पुण्य-पाप दोनों का त्याग कर समत्व को प्राप्त करता है।

गीता (18.30-32) में तीन प्रकार की बुद्धि बताई गई हैं—

1. सात्त्विकी बुद्धि: धर्म-अधर्म का यथार्थ निर्णय करती है।
2. राजसी बुद्धि: परिणाम-लालसा और आसक्ति से युक्त।
3. तामसी बुद्धि: अधर्म को धर्म समझ बैठती है।

यह वर्गीकरण बुद्धि के नैतिक स्वरूप को स्पष्ट करता है, जहाँ निर्णय केवल तर्क पर नहीं, बल्कि धर्म-संवेदना पर आधारित होता है।

(ग) योगदर्शन में विवेकबुद्धि-

पतञ्जलि के अनुसार— “विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः ॥” (योगसूत्र, II.26) अविप्लव (अविचल) विवेकख्याति ही दुःखों की निवृत्ति का साधन है। योगसूत्र बुद्धि को साधना द्वारा परिष्कृत करने की बात करता है। ध्यान, समाधि और प्रत्याहार द्वारा जब चित्त शुद्ध होता है तब बुद्धि में विवेक का प्रकाश होता है, और यही “प्रज्ञा” कहलाती है।

(घ) बौद्ध दर्शन में प्रज्ञा-

बुद्ध ने कहा— “प्रज्ञा परं ज्योतिः।” प्रज्ञा सर्वोच्च प्रकाश है जो अज्ञानरूपी अन्धकार को नष्ट करती है। बौद्ध त्रिशिक्षा में शील-समाधि-प्रज्ञा तीन अंग हैं। प्रज्ञा वह ज्ञान है जो यथाभूतं ज्ञानं अर्थात् वस्तु को उसके वास्तविक स्वरूप में जानता है। बौद्ध परंपरा में तीन प्रकार की प्रज्ञा कही गई है—

1. श्रुतमयी प्रज्ञा – श्रवण से प्राप्त ज्ञान।
2. चिन्तामयी प्रज्ञा – तर्क एवं विचार से प्राप्त ज्ञान।
3. भावनामयी प्रज्ञा – ध्यान एवं अनुभव से प्राप्त ज्ञान।

(ङ) वेदान्त दर्शन में विवेक-

शंकराचार्य ने विवेकचूडामणि में कहा — “नित्यानित्य वस्तुविवेकः परमार्थदर्शनम्।” नित्य और अनित्य का विवेक ही परमार्थ ज्ञान की आरम्भिक सीढ़ी है। वेदान्त में बुद्धि का उद्देश्य आत्मा और अनात्मा का भेद जानना है। यह विवेक ही मुक्ति का द्वार खोलता है।

(च) आधुनिक विद्वानों का योगदान-

आधुनिक भारतीय दार्शनिकों — डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष, महर्षि अरविन्द आदि — ने बुद्धि को “नैतिक और आत्मबोधात्मक शक्ति” के रूप में प्रस्तुत किया। राधाकृष्णन के अनुसार — “बुद्धि वह शक्ति है जो आत्मा और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।” स्वामी विवेकानन्द ने कहा — “विवेक ही आत्मा की पहली किरण है।”

2. सैद्धान्तिक आधार (Theoretical Framework)

(क) भारतीय मनोसंरचना का ढाँचा:

भारतीय मनोविज्ञान चार मुख्य घटकों की चर्चा करता है —

1. मन (संकल्प-विकल्प)
2. बुद्धि (निर्णय शक्ति)
3. अहंकार (कर्तृत्वबोध)
4. चित्त (स्मृति एवं संस्कार)

इनमें बुद्धि का कार्य “निर्णय और विवेक” है। सांख्यदर्शन के अनुसार बुद्धि “महत्तत्त्व” का रूप है, जो प्रकृति से प्रथम उत्क्रमण में उत्पन्न होती है। यह जगत् के नियमन का मूल साधन है।

(ख) बुद्धि और प्रज्ञा का पारस्परिक सम्बन्ध:

जहाँ बुद्धि निर्णयात्मक शक्ति है, वहीं प्रज्ञा उसका विकसित और आध्यात्मिक रूप है। गीता का “स्थितप्रज्ञ” और बौद्ध धर्म का “प्रज्ञापारमिता” दोनों “अविचल विवेक और समत्व” के प्रतीक हैं। “स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशवः?” (गीता, 2.54) स्थितप्रज्ञ व्यक्ति वह है जो सुख-दुःख में सम रहता है और आसक्ति से मुक्त है।

(ग) समन्वित दृष्टिकोण:

भारतीय ज्ञान परंपरा में बुद्धि केवल मानसिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि धर्मनिष्ठ चेतना है। इसकी दिशा आत्मबोध और लोकसंग्रह — दोनों की ओर होती है। इस दृष्टिकोण के आधार पर एक समन्वित वैचारिक मॉडल प्रस्तुत किया जा सकता है —

स्तर	क्षेत्र	प्रमुख लक्षण	उद्देश्य
1	ज्ञानात्मक (Cognitive)	तर्क, विचार, निर्णय	सत्य का बोध
2	नैतिक (Moral)	धर्म-अधर्म का विवेक	सदाचार एवं नीति
3	भावनात्मक (Affective)	करुणा, समत्व	आत्म-संयम
4	आध्यात्मिक (Spiritual)	आत्मबोध, समत्वयोग	मोक्ष / मुक्ति

यह चार-स्तरीय ढाँचा स्पष्ट करता है कि बुद्धि भारतीय परंपरा में केवल सोचने की क्षमता नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व का नियामक है — जो व्यक्ति, समाज और विश्व के कल्याण में योगदान देता है।

भाग-3 : बुद्धि के प्रकार, मापन-उपाय और जीवनोपयोगिता:

1. बुद्धि के प्रकार (Classification of Buddhi)

भारतीय ज्ञान परंपरा में बुद्धि का स्वरूप बहुआयामी है। विभिन्न ग्रंथों में इसे विभिन्न रूपों में वर्गीकृत किया गया है — जैसे सात्त्विक-राजस-तामस बुद्धि, विवेकबुद्धि, स्थिरप्रज्ञ बुद्धि, प्रज्ञा के तीन स्तर आदि।

(क) गीता के अनुसार बुद्धि का त्रिविध भेद-

भगवद्गीता के अठारहवें अध्याय (18.30-32) में श्रीकृष्ण ने बुद्धि के तीन प्रकार बताए हैं — “प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये। बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥” (भगवद्गीता, 18.30) यहाँ सात्त्विकी बुद्धि वह है जो धर्म-अधर्म, कर्म अकर्म और मोक्ष-बंधन का यथार्थ निर्णय करती है। राजसी बुद्धि लाभ-हानि और स्वार्थ से प्रेरित होती है। तामसी बुद्धि अधर्म को धर्म समझती है, और विपरीत दिशा में चल पड़ती है। यह वर्गीकरण यह दर्शाता है कि बुद्धि केवल ज्ञानेन्द्रियगत क्रिया नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक विवेक से जुड़ी हुई शक्ति है।

(ख) योगदर्शन में विवेकबुद्धि-

पतञ्जलि योगसूत्र में “विवेकख्याति” को बुद्धि का सर्वोच्च रूप बताया गया है — “विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः॥” (योगसूत्र, II.26) अर्थात् अविचल विवेकख्याति ही दुःखों के नाश का उपाय है। यहाँ विवेक का तात्पर्य उस सतत जागरूकता से है जिससे मनुष्य वास्तविक (नित्य) और अवास्तविक (अनित्य) में भेद कर सके। योगसूत्र के अनुसार जब चित्त की वृत्तियाँ शांत होती हैं, तब बुद्धि शुद्ध होकर प्रज्ञा में परिवर्तित हो जाती है। यही अवस्था “ऋतम्भरा प्रज्ञा” कही गई है — “ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा।” (योगसूत्र, I.48) यह सत्य में स्थित बुद्धि है — जहाँ ज्ञान का आधार न अनुभव है, न अनुमान, बल्कि सत्यस्वरूप का प्रत्यक्ष बोध है।

(ग) बौद्ध दर्शन में प्रज्ञा के प्रकार= बौद्ध दर्शन में प्रज्ञा ही मोक्ष का साधन मानी गई है। तिपिटक के अनुसार प्रज्ञा के तीन रूप हैं —

1. श्रुतमयी प्रज्ञा (Sutamayī Paññā): श्रवण या अध्ययन से प्राप्त ज्ञान।
2. चिन्तामयी प्रज्ञा (Cintāmayī Paññā): तर्क और मनन से उत्पन्न विवेक।
3. भावनामयी प्रज्ञा (Bhāvanāmayī Paññā): साधना और ध्यान से उत्पन्न अंतःदृष्टि।

इन तीनों स्तरों के माध्यम से बुद्धि क्रमशः शुद्ध होकर *अविप्लव विवेक* में परिणत होती है। यही अवस्था *बोधि* या *निर्वाण* की दिशा में ले जाती है।

(घ) वेदान्त में विवेकबुद्धि और नित्य-अनित्य का भेद-

शंकराचार्य के अनुसार — “नित्यानित्य वस्तुविवेकः परमार्थदर्शनम्।” (*विवेकचूडामणि*, श्लोक 19) वेदान्त में बुद्धि का लक्ष्य है— “नित्य” (आत्मा) और “अनित्य” (शरीर-मन) में भेद करना। जब यह विवेक दृढ़ होता है, तब व्यक्ति मोह, आसक्ति और अहंकार से मुक्त हो जाता है।

2. बुद्धि के मापन के उपाय (Measurement Framework of Buddhi):

भारतीय ज्ञान परंपरा में बुद्धि के मापन की चर्चा आधुनिक “IQ” जैसी यांत्रिक कसौटी पर नहीं, बल्कि *विवेक-संयम-करुणा-आत्मबोध* जैसे आन्तरिक सूचकों के माध्यम से की गई है।

(क) पारम्परिक कसौटियाँ-

1. धर्माधिष्ठित निर्णय (Ethical discernment): व्यक्ति का निर्णय धर्म-अधर्म के आधार पर होता है या स्वार्थ पर।
2. समत्व (Equanimity): सुख-दुःख में समान रहने की क्षमता।
3. आत्मसंयम (Self-regulation): इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण।
4. करुणा (Compassion): दूसरों के दुःख में संवेदनशीलता।
5. निरहंकारिता (Egolessness): कर्म में निष्कामभाव।

इन सभी को गीता के “स्थितप्रज्ञ” (2.54-72) के लक्षणों से मापा जा सकता है — “प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥” (*गीता*, 2.55)

(ख) आधुनिक मनोवैज्ञानिक एकीकरण

भारतीय दृष्टिकोण के अनुरूप बुद्धि के मापन के लिए एक **BUDDHI-PRAJÑĀ Index** प्रस्तावित किया जा सकता है, जिसमें निम्न आयाम सम्मिलित हों —

संक्षेप	घटक	मूल्यांकन संकेतक	संभावित विधि
B	Bhāvanā (भावनात्मक स्थिरता)	समत्व, सहानुभूति	भावनात्मक संतुलन स्केल
U	Understanding (विवेक)	धर्म-अधर्म का निर्णय	केस-आधारित निर्णय परीक्षण
D ₁	Dhāraṇā (एकाग्रता)	मनोनिग्रह, ध्यान-नियंत्रण	ध्यान-कार्य (Attention Task)
D ₂	Dayā (करुणा)	परहितभाव, निष्काम सेवा	व्यवहारिक अवलोकन
H	Harmony (सामंजस्य)	कथनी-करनी की संगति	आत्ममूल्यांकन स्केल
I	Integration (आत्मबोध)	आत्मचिंतन, अनासक्ति	आत्म-परावर्तन जर्नल

यह मॉडल बुद्धि को संज्ञानात्मक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक—चारों स्तरों पर एकीकृत रूप में मापने का प्रयास करता है।

(ग) वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis)

भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार बुद्धि का शोधन *योग, ध्यान, जप, स्वाध्याय और सेवा* से संभव है। आधुनिक तंत्रिका-विज्ञान (neuroscience) में भी ध्यान और नैतिक भावनाओं के अभ्यास से *prefrontal cortex* की सक्रियता, *response*

inhibition तथा *empathy circuits* में सुधार के प्रमाण मिले हैं। इस प्रकार भारतीय मापन-पद्धति का वैज्ञानिक समर्थन भी आधुनिक शोधों से जुड़ा है।

3. जीवनोपयोगिता (Practical Relevance of Buddhi in Life):

(क) शिक्षा में-

- मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि विवेकशील नागरिक तैयार करना है।
- गीता-आधारित *बुद्धियुक्त कर्मयोग* से विद्यार्थी आत्मसंयम, निष्कामभाव और निर्णय-क्षमता विकसित करते हैं।
- विद्यालयों में “प्रज्ञा-विकास” के लिए *ध्यान*, *स्वाध्याय* और *सेवा-अभ्यास* को जोड़ा जा सकता है।

(ख) नेतृत्व और प्रबंधन में-

- सात्त्विक बुद्धि नेतृत्व को नैतिक, पारदर्शी और लोकहितकारी बनाती है।
- “लोकसंग्रह” (गीता 3.20) का सिद्धान्त आधुनिक संगठनात्मक नीति का आधार हो सकता है।
- निर्णय में *समत्व* और *निष्काम कर्म* से संगठन में विश्वास और सहयोग बढ़ता है।

(ग) मानसिक स्वास्थ्य में-

- विवेकपूर्ण बुद्धि तनाव, क्रोध और भय को नियंत्रित करने में सहायक होती है।
- योग और ध्यान बुद्धि को एकाग्र, संयमी और स्थिर बनाते हैं।
- *भावनामयी प्रज्ञा* का विकास व्यक्ति में आत्म-स्वीकृति और संतुलन का भाव उत्पन्न करता है।

(घ) सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन में-

- बुद्धि का लक्ष्य केवल व्यक्तिगत मुक्ति नहीं, बल्कि *वसुधैव कुटुम्बकम्* की भावना के साथ समाज का कल्याण है।
- करुणा, समत्व और सत्य का पालन सामाजिक सौहार्द को बनाए रखते हैं।
- जब बुद्धि आत्मा की ओर उन्मुख होती है, तब व्यक्ति *स्थिरप्रज्ञ* बनता है — यही जीवन का सर्वोच्च बोध है।

भारतीय दृष्टिकोण में बुद्धि केवल तर्कशक्ति या ज्ञान-संग्रह नहीं है, बल्कि वह धर्म, करुणा और आत्मबोध से संयुक्त *जीवन-दर्शन* है। गीता की सात्त्विकी बुद्धि, योगसूत्र की विवेकख्याति, बौद्ध की भावनामयी प्रज्ञा और वेदान्त का नित्य-अनित्य विवेक — इन सभी में एक समान सूत्र है — “विवेक से संयम, संयम से शुद्धि, और शुद्धि से मुक्ति।”

व्याख्या(Discussion):

भारतीय ज्ञान परंपरा में “बुद्धि” का स्वरूप केवल मानसिक या बौद्धिक नहीं है, बल्कि यह *नैतिक चेतना*, *आत्मसंयम* और *आध्यात्मिक विवेक* का प्रतिरूप है। आधुनिक मनोविज्ञान जहाँ बुद्धि को समस्या-समाधान या बुद्धिलब्धि (IQ) तक सीमित रखता है, वहीं भारतीय दृष्टिकोण बुद्धि को “विवेक-करुणा-धर्मबोध” की समेकित शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

(क) तुलनात्मक विमर्श

उपनिषदों में बुद्धि आत्मा की दिशा निर्धारित करने वाली सारथि है; गीता में वह धर्म-अधर्म का निर्णय करने वाली विवेकशक्ति है; योगदर्शन में विवेकख्याति के रूप में मुक्ति का साधन है; बौद्ध धर्म में वह प्रज्ञा है जो यथार्थ का साक्षात्कार कराती है; और वेदान्त में वही विवेक आत्मा और अनात्मा का भेद कराने वाली ज्ञानशक्ति है। इन सभी में एक समान तत्व है—*सत्य की पहचान और मोह से विमुक्ति*।

(ख) समन्वित दृष्टिकोण

यह समन्वित दृष्टिकोण आधुनिक युग में अत्यंत उपयोगी है। आज की शिक्षा, नेतृत्व और मानसिक स्वास्थ्य-प्रणालियाँ केवल “ज्ञान” पर नहीं, बल्कि “विवेक और करुणा” पर आधारित होनी चाहिए। गीता की “सात्त्विकी बुद्धि” आज के *ethical leadership, value-based education* और *compassionate governance* का भारतीय रूपक है। योगसूत्र का *विवेकख्याति* सिद्धान्त आधुनिक *mindfulness* और *self-awareness* के समतुल्य है। वेदान्त का *नित्य-अनित्य विवेक* आधुनिक *existential awareness* और *inner stability* का दर्शन प्रस्तुत करता है।

(ग) वैज्ञानिक साक्ष्य और आधुनिक संवाद

वर्तमान न्यूरोवैज्ञानिक शोधों में यह प्रमाणित हुआ है कि ध्यान, प्रार्थना, और करुणा-प्रशिक्षण से *prefrontal cortex* की सक्रियता बढ़ती है, जिससे निर्णय क्षमता और आत्म-नियंत्रण में सुधार आता है। इस प्रकार, भारतीय साधना-पद्धतियाँ न केवल आध्यात्मिक, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी बुद्धि-विकास में सहायक हैं।

(घ) व्यावहारिक निहितार्थ

1. **शिक्षा क्षेत्र में:** विद्यार्थियों में नैतिक निर्णय, करुणा और आत्मसंयम का विकास मूल्याधारित शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है।
2. **नेतृत्व और प्रबंधन में:** सात्त्विक बुद्धि वाला नेता स्वार्थरहित होकर लोकसंग्रह की भावना से निर्णय लेता है।
3. **मानसिक स्वास्थ्य में:** ध्यान और आत्मपरावर्तन बुद्धि को स्थिरता और संतुलन प्रदान करते हैं, जिससे तनाव-नियंत्रण एवं मानसिक लचीलापन (*resilience*) विकसित होता है।
4. **सामाजिक जीवन में:** बुद्धि व्यक्ति को “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना से जोड़ती है, जो विश्वशांति और सार्वभौमिक सद्भाव की दिशा में मार्ग प्रशस्त करती है।

2. निष्कर्ष (Conclusions):

भारतीय ज्ञान परंपरा में “बुद्धि” जीवन का मार्गदर्शक तत्त्व है — वह शक्ति जो मन, इन्द्रियों और अहंकार को नियंत्रित कर आत्मा को उसके परम ध्येय की ओर अग्रसर करती है। यह केवल बौद्धिकता नहीं, बल्कि *विवेकपूर्ण करुणा* है — वह दृष्टि जो धर्म-अधर्म का निर्णय करती है और समत्व का भाव उत्पन्न करती है। गीता की सात्त्विकी बुद्धि, योगसूत्र की विवेकख्याति, बौद्ध धर्म की भावनामयी प्रज्ञा और वेदान्त का नित्य-अनित्य विवेक — सभी एक ही सूत्र में बँधे हैं:

“विवेक से संयम, संयम से शुद्धि, और शुद्धि से मुक्ति।”

आधुनिक युग में जब भौतिक प्रगति के साथ नैतिक द्वंद्व बढ़ रहा है, तब भारतीय बुद्धि-दर्शन यह संदेश देता है कि **सच्ची बुद्धि वही है जो जीवन में सत्य, धर्म और करुणा का समन्वय करे।** यह दृष्टिकोण शिक्षा, नीति, प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य—सभी क्षेत्रों में एक समग्र, मानव-केंद्रित और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची (References)

- [1]. कठोपनिषद् — अध्याय 1.3.3-9
- [2]. भगवद्गीता — अध्याय 2.50, 2.55-72, 10.4-5, 18.30-32
- [3]. योगसूत्र पतञ्जलि — I.48, II.26, II.29-45
- [4]. ऋग्वेद — 1.84.18
- [5]. यजुर्वेद — 32.15
- [6]. मुण्डकोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद् — आत्मविद्या संदर्भ
- [7]. विवेकचूडामणि — श्लोक 19, 20, 21
- [8]. बुद्धचरित (अश्वघोष) — प्रज्ञा और बोधिपथ के संदर्भ
- [9]. धम्मपद — “प्रज्ञा परं ज्योति”
- [10]. राधाकृष्णन, एस. (1956). Indian Philosophy, Vol. 1 & 2. London: Allen & Unwin.
- [11]. स्वामी विवेकानन्द (1896). Complete Works of Swami Vivekananda. Advaita Ashrama.
- [12]. अरविन्द घोष (1951). The Life Divine. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram.
- [13]. शर्मा, चन्द्रधर (1996). भारतीय दर्शन का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.
- [14]. जोशी, के. (1988). The Vedic Vision of Consciousness. Indian Council of Philosophical Research.
- [15]. दासगुप्त, सूर्यकान्त (1932). A History of Indian Philosophy, Vol. 1-5. Cambridge University Press.
- [16]. शास्त्री, हजारी प्रसाद द्विवेदी (1962). भारतीय संस्कृति और साहित्य. इलाहाबाद: लोकभारती.
- [17]. Singh, R. & Sinha, J. (2008). Indian Psychology: Theoretical Frameworks and Applications. New Delhi: Pearson.
- [18]. Dalai Lama (1999). Ethics for the New Millennium. New York: Riverhead Books.
- [19]. Wallace, B. A. (2007). Contemplative Science: Where Buddhism and Neuroscience Converge. Columbia University Press.

Cite this Article:

डॉ. सुरेन्द्र पाल सिंह, “ भारतीय ज्ञान परंपरा में बुद्धि की अवधारणा: अर्थ, प्रकार, मापन-उपाय और जीवनोपयोगिता ”, *International Journal of Emerging Voices in Education*, ISSN: 3107-958X (Online), Volume 1, Issue 2, pp. 09-16, October 2025.

Journal URL: <https://ijeve.com/>

DOI: <https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i2.7>